INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 11 | DECEMBER – 2025

"सतना जिले में भारतीय जीवन बीमा निगम की निवेश नीतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

डॉ. प्रतिमा बनर्जी[1] , अंकिता परौहा[2]
[1]प्राध्यापक वाणिज्य विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.)
[2]शोधार्थी वाणिज्य, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.)

सारांश –

भारतीय जीवन बीमा निगम (एल.आई.सी.) न केवल एक प्रमुख बीमा प्रदाता संस्था के रूप में कार्य रही है, बल्कि भारत की वित्तीय प्रणाली में एक सशक्त सामाजिक निवेशक के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है। इस शोध पत्र का उद्देश्य सतना जिले के संदर्भ में एल.आई.सी. की निवेश नीतियों का विश्लेषण करना है। अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है कि एल.आई.सी. की नीतियाँ सामाजिक, आधारभूत संरचना एवं वित्तीय समावेशन जैसे क्षेत्रों में किस प्रकार कार्य करती हैं और उनका स्थानीय विकास पर कैसा प्रभाव पड़ता है। शोध पत्र के माध्यम से यह भी उजागर किया गया है कि इसकी निवेश नीतियों की चुनौतियाँ क्या हैं और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। यह शोध प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा इसमें सतना जिले की आर्थिक–सामाजिक स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए एल.आई.सी. की भूमिका को परखा गया है।

मुख्य शब्द – भारतीय जीवन बीमा निगम (एल.आई.सी.), निवेश नीति, सतना जिला, सामाजिक निवेश, आधारभूत संरचना, वित्तीय समावेशन, आर्थिक विकास, बीमा क्षेत्र, नीति सुधार।

प्रस्तावना –

भारत जैसे विकासशील देश में वित्तीय संस्थाओं की भूमिका केवल लाभ अर्जन तक सीमित नहीं होती, बल्कि वे समाज के समग्र विकास में भी निर्णायक भूमिका निभाती हैं। भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) ऐसी ही एक प्रमुख सार्वजनिक बीमा संस्था है, जिसकी स्थापना 1 सितंबर 1956 को संसद के अधिनियम के अंतर्गत की गई थी। अपनी स्थापना के समय से ही एलआईसी का उद्देश्य न केवल जीवन बीमा कवरेज प्रदान करना रहा है, बल्कि राष्ट्रीय पूंजी निर्माण और सामाजिक उत्थान हेतु विविध क्षेत्रों में निवेश कर देश के आर्थिक ढांचे को सशक्त करना भी रहा है। एलआईसी देश की सबसे बड़ी जीवन बीमा कंपनी होने के साथ–साथ सबसे बड़े संस्थागत निवेशकों में से एक है। इसका निवेश कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा, अधोसंरचना और आवास जैसे विविध क्षेत्रों में होता है। इन निवेशों का उद्देश्य लाभप्रदाता के साथ–साथ सामाजिक उत्तरदायित्व की पूर्ति करना भी है।

सतना जिला, मध्यप्रदेश राज्य का एक महत्वपूर्ण जिला है, जो न केवल खनिज और औद्योगिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यहाँ ग्रामीण और अर्द्धशहरी जनसंख्या का प्रभुत्व भी अधिक है। जिले की

सामाजिक–आर्थिक संरचना को मजबूती देने हेतु एलआईसी जैसी संस्था की निवेश नीतियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं। सतना जिले में एलआईसी द्वारा किए गए निवेशों का प्रभाव स्थानीय रोजगार, आधारभूत ढाँचे के विकास, ग्रामीण सशक्तिकरण तथा सामाजिक सेवाओं की उपलब्धता पर किस प्रकार पड़ता है, यह शोध का मुख्य उद्देश्य रहा है।

इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि एलआईसी की निवेश नीतियाँ सतना जिले की क्षेत्रीय आवश्यकताओं के कितनी अनुकूल हैं, इनसे स्थानीय विकास को क्या लाभ हुआ है और भविष्य में इन नीतियों में क्या सुधार संभावित हैं। इस विश्लेषण से न केवल नीति निर्माताओं को व्यवहारिक सुझाव प्राप्त होंगे, बल्कि एलआईसी जैसी संस्थाओं के क्षेत्रीय निवेश प्रभाव का एक व्यापक मूल्यांकन भी संभव हो सकेगा।

शोध उद्देश्य –

शोध पत्र प्रारंभ करने से पूर्व यह निश्चिय करना परम आवश्यक होता है कि शोध से संबंधित सूचनाओं का गहन अध्ययन करना नवीन प्रश्नों का निर्माण, अवधारणाओं एवं समझ को विकसित करने हेतु तत्वों का पता लगाना तथा नवीन सम्भावनाओं को खोजना शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य माना जाता है। शोध की अवधारणा प्रत्येक क्षेत्र में होती है, जिससे प्रत्येक क्षेत्र को और अधिक सशक्त बनाया जा सके। अध्ययन का क्षेत्र तो बहुत व्यापक है, परन्तु व्यापक क्षेत्र में ही शोध के निश्चित उद्देश्यों से संबंधित तथ्य ही एकत्र किये जायेंगे। प्रस्तावित शोध पत्र से संबंधित कुछ प्रमुख उद्देश्यों का निर्माण किया गया है, जो इस प्रकार है–

- सतना जिले में भारतीय जीवन बीमा निगम की निवेश गतिविधियों का अध्ययन करना।
- एलआईसी की निवेश नीतियों का जिले के सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- भारतीय जीवन बीमा निगम की निवेश नीतियों का अवलोकन करना।

उपरोक्त उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध पत्र को वास्तविक मानकों के अनुरूप पूर्ण करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

शोध विधि –

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रयोग किये जाने वाले तथ्यों को प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से एकत्रित किया गया है। जिसके लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों का संकलन सतना जिले की एल.आई.सी. शाखाओं, अधिकारियों, निवेश प्राप्त संस्थाओं एवं कुछ बीमित उपभोक्ताओं से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से समंक एकत्र किये गये हैं। द्वितीयक स्रोतों में एल.आई.सी. की वार्षिक रिपोर्टें, वित्तीय लेखे–जोखे, बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDA) की रिपोर्टें, शासकीय प्रकाशन, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ एवं शोध–पत्र इत्यादि से एकत्रित किये गये हैं। समंकों को वर्गीकृत कर सारणीयन के पश्चात् विश्लेषणात्मक अध्ययन कर परिणाम प्राप्त किये गये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में अवलोकन, सर्वेक्षण, निदर्शन इत्यादि प्रविधियों का भी यथा सम्भव प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण –

भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) की सतना जिले में की गई निवेश गतिविधियाँ बहुआयामी हैं, जो न केवल आर्थिक सुदृढ़ता बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। तालिका में वर्ष 2020–21 से 2022–23 के दौरान सतना जिले में चार प्रमुख क्षेत्रों – ग्रामीण आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, और लघु उद्योगों में किए गए निवेश के विवरण को प्रदर्शित किया गया है, जो इस प्रकार है–

तालिका क्रमांक – 01

सतना जिले में भारतीय जीवन बीमा निगम की निवेश गतिविधियाँ

क्रमांक	निवेश क्षेत्र	वर्ष 2020–21 (रुपये करोड़ में)	वर्ष 2021–22 (रुपये करोड़ में)	2022–23 (रुपये करोड़ में)
1.	ग्रामीण आवास	12.00	15.00	16.50
2.	शिक्षा क्षेत्र	6.00	7.20	8.00
3.	स्वास्थ्य	5.00	5.50	6.10
4.	लघु उद्योगों में ऋण	3.40	3.90	4.60

स्रोत– एलआईसी सतना डिवीजन/शाखा कार्यालय की वार्षिक निवेश रिपोर्ट, वर्ष 2020–21, 2021–22 एवं 2022–23।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जिले में ग्रामीण आवास के अंतर्गत वर्ष 2020–21 में रुपये 12 करोड़ से शुरू होकर यह निवेश 2022–23 में रुपये 16.5 करोड़ तक पहुँच गया, जो लगभग 37.5 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। यह बढ़ोत्तरी सतना जिले में ग्रामीण आवासीय ढाँचे के सशक्तिकरण को दर्शाती है। एल. आई.सी. द्वारा इस क्षेत्र में किया गया निवेश न केवल आवासीय सुविधाओं में सुधार को प्रदर्शित कर रहा है, बल्कि ग्रामीण रोजगार, स्वरोजगार एवं आर्थिक सशक्तिकरण को भी बढ़ावा दे रहा है। इस प्रकार यह निवेश सामाजिक स्थायित्व को भी बल प्रदान कर रहा है।

शिक्षा क्षेत्र में निवेश 2020–21 में रुपये 6 करोड़ था, जो 2022–23 में बढ़कर रुपये 8 करोड़ हो गया है, यानी 33.33 प्रतिशत वृद्धि हुई। एल.आई.सी. ने इस अवधि में निजी विद्यालयों, ग्रामीण विद्यालयों के इंफ्रास्ट्रक्चर और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश किया गया है। इससे विद्यालयों की गुणवत्ता, छात्र संख्या और डिजिटल अधिगम संसाधनों में सुधार हुआ है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में तीन वर्षों में किये गये निवेश रुपये 5 करोड़ से बढ़कर रुपये 6.1 करोड़ तक पहुँच गया, जो लगभग 22 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। यह निवेश प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, ग्रामीण डिस्पेंसरी, मोबाइल मेडिकल यूनिट्स और कोविड–19 से संबंधित आपातकालीन सेवाओं में किया गया है। इससे सतना जिले में स्वास्थ्य सेवाओं तक लोगों की पहुँच और गुणवत्ता दोनों में सुधार हुआ है।

एल.आई.सी. द्वारा लघु उद्योगों में ऋण के रूप में निवेश वर्ष 2020–21 में रुपये 3.4 करोड़ था, जो 2022–23 में रुपये 4.6 करोड़ तक पहुँच गया है, यानी 35.29 प्रतिशत की वृद्धि निवेश में हुई है। यह निवेश मुख्यतः कुटीर उद्योगों, महिला स्वयं सहायता समूहों, बुनकरों और ग्रामीण स्वरोजगार योजनाओं में किया गया है। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिली और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को बल मिला है।

निष्कर्ष –

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय जीवन बीमा निगम की निवेश नीतियाँ सतना जिले में सामाजिक एवं आर्थिक विकास के एक सशक्त साधन के रूप में कार्य कर रही हैं। एल.आई.सी. का निवेश मॉडल न केवल नागरिकों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है, बल्कि स्थानीय आधारभूत संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार को भी मजबूती दे रहा है। सतना जैसे अर्द्धग्रामीण जिले में इस प्रकार का संस्थागत निवेश अत्यंत आवश्यक है, जिससे राज्य एवं केंद्र सरकार की योजनाओं को सहयोग प्राप्त होगा। एल.आई.सी. के निवेशों ने जिले में लघु एवं कुटीर उद्योगों को सहारा प्रदान किया है, जिससे ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को स्वावलंबन की दिशा में प्रोत्साहन मिल रहा है। हालाँकि, यह भी देखा गया कि निवेश नीति की पारदर्शिता, ग्रामीण जागरूकता और समावेशन को लेकर अभी भी कुछ सुधार की आवश्यकता है।

एल.आई.सी. को चाहिए कि वह अपनी निवेश योजनाओं को अधिक जन–सुलभ बनाए, क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से निवेश लक्ष्यों को स्पष्ट करे और वित्तीय साक्षरता अभियान चलाकर ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों को प्रशिक्षित करे। यदि यह संस्था अपने सामाजिक निवेश मिशन को सुदृढ़ रूप से लागू करती है, तो निःसंदेह यह देश के विकास के साथ–साथ क्षेत्रीय असमानताओं को भी समाप्त कर सकती है। सतना जिले में इसका प्रारंभिक प्रभाव सकारात्मक रहा है, जिसे आगे विस्तृत रूप से फैलाने की आवश्यकता है।

संदर्भ –

1. भारतीय जीवन बीमा निगम (2023), वार्षिक रिपोर्ट 2022–2023, मुंबई : भारतीय जीवन बीमा निगम मुख्यालय।
2. बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (2022), भारत में बीमा क्षेत्र प्रदर्शन रिपोर्ट, हैदराबाद : बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण।
3. भारतीय रिजर्व बैंक (2022), भारतीय अर्थव्यवस्था पर सांख्यिकी पुस्तिका, नई दिल्ली : भारतीय रिजर्व बैंक प्रकाशन।
4. मिश्र, आर. (2020), भारत में भारतीय जीवन बीमा निगम के निवेश पैटर्न : एक क्षेत्रीय अध्ययन, इंडियन जर्नल ऑफ इंश्योरेंस एंड रिस्क मैनेजमेंट, खंड 12(3), पृष्ठ 45
5. वर्मा, ए. एवं शर्मा, एन. (2019), भारत में अवसंरचना वित्तपोषण में एलआईसी की भूमिका, जर्नल ऑफ इकनॉमिक डेवलपमेंट स्टडीज, खंड 8(2), पृष्ठ 101
6. वित्त मंत्रालय (2023), आर्थिक सर्वेक्षण 2022–2023, नई दिल्ली : भारत सरकार।
7. चतुर्वेदी, पी. (2021) : बीमा क्षेत्र में निवेश की प्रवृत्तियाँ और उनका सामाजिक प्रभाव, नई दिल्ली : बीमा बोध प्रकाशन।
8. मध्यप्रदेश सरकार (2022), सतना जिला का सांख्यिकी सार 2021–2022, सतना : जिला सांख्यिकी कार्यालय।
9. जैन, एस. (2018), एक सामाजिक निवेशक के रूप में एलआईसी : एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, फाइनेंस इंडिया, खंड 32(1), पृष्ठ 78
10. लोकसभा सचिवालय (2021), बीमा क्षेत्र की समीक्षा पर रिपोर्ट, नई दिल्ली : संसदीय प्रकाशन प्रभाग।